7 OCT 201 पीपुल्स समाचार, भोपाल

मप्र में बेटी बचाओ अभियान का शंखनाद-2

बेटियां होंगी प्रदेश के माथे की बिंदिया

मदनमोहन जोशी
jncancer@airtel.in

देश में इन दिनों 'त्राहिमाम् त्राहिमाम्' याने 'बचाओ बचाओ' की कर्णभेदी और मर्मभेदी आवाजें सभी तरफ सुनाई दे रहीं है । कोई भ्रष्टाचार से बचाओ की गुहार लगाए हुए है तो कोई बढ़ती महंगाई को लेकर हाय तौबा कर रहा है । इस हाहाकार के बीच अगर माधुर्य, ममता और समता की स्वर लहरी सुनाई पड़ रही है तो वह शायद मध्यप्रदेश का 'बेटी बचाओ' आह्वान की बदौलत है ।

समाज में लड़कियों की संख्या कम होने के पीछे एक ओर जहां स्त्री को दिया गया दोयम दर्जा है वहीं लड़कियों का शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाओं से वंचित होना भी है । दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में इसे लेकर स्थिति भयावह है । सुप्रीम कोर्ट ने गर्भ में लिंग परीक्षण पर काफी समय से रोग लगा रखी है । इसके तहत सभी अस्पतालों व क्लीनिकों पर इस आशय की सूचना टांगना बंधनकारी है कि उनके यहां भ्रूण परीक्षण नहीं किया जाता है । यह हिदायत इस विडंबना को उजागर करती है कि एक रूढ़िग्रस्त और विषमतामूलक समाज में तकनीकी और वैज्ञानिक सुविधाएं अमानवीयता का किस हद तक औजार बन जाती हैं ।

पश्चिम के देशों में भी ऐसे युग आ चुके हैं जब स्त्रियों को स्वतंत्रता देना तो दूर उन्हें इंसान मानने से भी इंकार किया गया । रूस में जारशाही के दौरान यह अजीबोगरीब मुहावरा प्रचलित था 'खच्चर घोड़ा नहीं होता, मुर्गी पक्षी नहीं होती, स्त्री मनुष्य नहीं होती ।' उसी रूस में क्रांति के बाद इस कदर बदलाव आया कि जब द्वितीय महायुद्ध में शत्रुओं की सेनाएं लेनिनग्राद के करीब जा पहुंची तो महिलाओं ने सुरक्षा की ऐसे सुदृढ़ दीवार खड़ी कर दी कि आक्रमणकारियों के सैनिक दस्तों को मायूस होकर लौटना पड़ा।

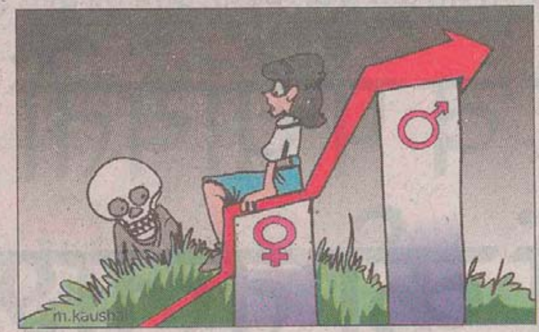

इटली भी कमोबेश ऐसे ही अभिशप्त दौर से गुजर चुका है। एक समय था जब वहां बेटा होने पर सड़क पर पानी फेंका जाता था यह दर्शाने के लिए कि उसका कार्यक्षेत्र घर के बाहर है जबकि बेटी होने पर तवे पर पानी की बूंदें छिड़की जाती थीं जिसका आशय यह था कि उन्हें तो जिंदगी भर चूल्हे चक्की से बंधे रहना है । समय ने करवट ली और इटली में नारी मुक्ति के वे तमाम द्वारा खुल गए जो नारी शक्ति की ऊंची उड़ान के लिए आवश्यक है । यदि दुनिया के दूसरों देशों में बदलाव की बयार बह सकती है तो भारत में भी यकीनन देर अबेर ऐसी सुबह आएगी ।

शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों ने पिछले कुछ वर्षों से जिस तेजी से परचम फहराने शुरू किए हैं, महिलाओं ने राजनीति में पुरुषों के इंद्रासनों को डांवाडोल किया है, इसे देखते हुए बेटी के जन्म पर जो व्यक्ति सिर धुनता है या उसका आना रोकता है उसे अभागा कहा जाएगा या सिरफिरा ।

लड़के और लड़कियों के अनुपात का कोई भी चित्र तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मध्यप्रदेश जैसे पिछड़े राज्यों का जिक्र न किया जाए। योजनाकार अक्सर इनका गऊ पट्टी कहकर उपहास करते हैं। वे भूल जाते हैं कि सामाजिक असंतुलन दूर करने, पिछड़ेपन से उबरने, सामंती कुसंस्कारों को विसर्जित करने के लिए अगर इस भू भाग में कहीं कोई तीव्र तड़प है तो वह मध्यप्रदेश है। बैचेनी से ही विराट इरादे पैदा होते हैं जो बदलाव के कारगर हथियार साबित होते हैं । बैचेनी जितनी गहरी होगी उतनी ही प्रबल प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने की चाहत बलबती होगी । मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान इसी तड़प के पर्याय बन कर उभरे हैं । शिवराज ने यों कई मोर्चों पर प्रभावाली पहल की है लेकिन उनका 'बेटी बचाओ' अभियान जितना सामयिक है उतना ही सटीक भी है । सच तो यह है कि शिवराज ने जिन मोर्चों को सबसे ज्यादा सरगर्म किया है उनमें प्रमुख है बेटियों को उपेक्षा के दुष्चक्र से उबारना । इसके लिए उन्होंने एक पुख्ता रणनीति तैयार की है । इसी के तहत प्रदेश को 'बेटी बचाओ' के आव्हान से स्पंदित करने में जुट गए हैं । महिलाओं के सशक्तीकरण का शायद ही कोई पहलू हो जो शिवराज ने अपने पांच वर्ष के अब तक के कार्यकाल में महत्वाकांक्षाओं के मंगल कलश में नहीं संजोया हो । पहले बेटियों की शादियों के लिए गरीब और असहाय माता-पिताओं को सरकारी खजाने से सारा खर्च उठाने की सौगात दी, निःशुल्क शिक्षा और नौकरियों में समुचित आरक्षण की गारंटी दी और अब बेटों के मुकाबले बेटियों की घटती संख्या से प्रदेश को उबारने के लिए सुविचारित ताना-बाना बुना है । एक ओर जहां सरकारी मशीनरी को पूरी प्रतिबद्धता के साथ सक्रिय किया है, वहीं समाज के जागरूक वर्गों को भी ठोस योगदान देने के लिए माहौल रचने की दिशा में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। शिवराज ने चौपालों से लेकर चौराहों और मंच से लेकर मैदान तक अलख जगाने में खासतौर से महारत हासिल की है । इसकी बदौलत उनके कद में खासा इजाफा हुआ है ।

देश में इन दिनों 'त्राहिमाम् त्राहिमाम्' याने 'बचाओ बचाओ' की कर्णभेदी और मर्मभेदी आवाजें सभी तरफ सुनाई दे रहीं है । कोई भ्रष्टाचार से बचाओ की गुहार लगाए हुए है तो कोई बढ़ती महंगाई को लेकर हाय तौबा कर रहा है । आतंकवाद से बचाओ, पर्यावरण बचाओ, बाघों को बचाओ जैसे व्यग्र स्वर काश्मीर से कन्याकुमारी तक राष्ट्र की चेतना झकझोर रहे हैं । इस हाहाकार के बीच अगर माधुर्य, ममता और समता की स्वर लहरी सुनाई पड़ रही है तो वह शायद मध्यप्रदेश का 'बेटी बचाओ' आह्वान की बदौलत है ।

इसमें दो राय नहीं कि कल्याणकारी राज्य की यदि कोई सबसे मार्मिक और सार्थक कसौटी है तो वह कन्या है। दुर्भाग्य से वह कई लोगों के दिलों से दूर चली गई है। शिवराज का बेटी बचाओ आंदोलन यदि इस दूरी को समाप्त कर सका तो यह उपलब्धि प्रदेश के माथे पर बिंदी की तरह चमकेगी। ***समाप्त***

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)